दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,बिलासपुर

अंक – द्वितीय अप्रैल – जून वर्ष -2012

ई पत्रिका

मल्हार

नराकास,बिलासपुर की प्रथम पत्रिका 'नगर ज्योति' का दिनांक: 24.07.2012 को विमोचन करते हुए महाप्रबंधक श्री अरुनेन्द्र कुमार

संरक्षक	प्रमुख संपादक	संपादक
अरुनेन्द्र कुमार	प्रभात सहाय	विक्रम सिंह
महाप्रबंधक	मुराधि एवं मुख्य संरक्षा अधिकारी	वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

गज़ल

हम अपनी शराफत से बाज आ न सके,
तमाम उम्र कभी खुलके मुस्कुरा न सके।

वो एक तुम कि जिसे हम कभी भूला न सके,
वो एक हम जो कभी तुमको याद आ न सके।

इसी मलाल में गुजरेगी जिंदगी अपनी,
किसी के हो न सके औ किसी को पा न सके।

उसी की याद से रौशन है जिंदगी अपनी,
वो एक दर्द का रिश्ता जिसे कभी भूला न सके।

ये जिंदगी भी अजब जिंदगी है दुन्या की,
मिली जहान की दौलत सुकून पा न सके।

हम अपनी तबाही का जिक्र क्या करते ''अख्तर'' ,
जो अपने आपको अपनो से ही बचा न सके।

- एम.ए.अख्तर
से.नि.राजभाषा सहायक

भूलने की गलती कर बैठे

तुम्हारा पर्दाफाश हो रहा
है
तुम्हारी चोरियाँ
पकड़ी जा रही हैं
वे सारे इल्ज़ाम
जिनके लिए
मुझे उम्र कैद हुई
ज़िल्लत भरी ज़िंदगी
नसीब हुई
आज सारे सबूत
तुम्हारी तरफ़
इशारा कर रहे हैं
ये सच है
मेरे पास ज़िंदगी
कुछ ज़्यादा नहीं बची
पर ये तो अच्छा है
मेरे पास
खोने को कुछ भी नहीं
तुमने तो सोचा था
अमर रहोगे
ऐश के दिन
कभी ख़त्म न होंगे
जब चाहोगे
जिसे चाहोगे
बली का बकरा बना दोगे
इसकी टोपी
उसके सिर रखकर
निकल जाओगे
पर जब ख़ुद पर बन आती है न
पथरायी आँखों से
आँसू भी नहीं निकलते
मर चुकी आत्मा से
रोया भी नहीं जाता
तुम कितने असहाय हो चुके हो
आज तुम्हारे लिए
रोने वाला कोई नहीं
कल तक जो लोग
तुम्हारी जयकार
करते थे
आज तुम्हारी बर्बादी पर
तालियाँ बजा रहे हैं
तुम्हारी करनी का फल बता
तुम्हें कोस रहे हैं
और तुम
कल तक जिस किस्मत पर
फ़ख्र करते थे
आज उसे कोस रहे हो
समय का पहिया है साहब
ये तो होना ही था
बस आप
भूलने की गलती कर बैठे।

--- नादिर अहमद खान
जूनियर इंजीनियर/ आईटी/ मुख्यालय

राजनीति

चरित्र की निरंतर
होती
अधोगति,
मतलब,
राजनीति की ऊर्ध्वगति।।

***

मजदूर

झोपड़ों को
महल बनाकर,
आलू से अन्न तक
ऊपजाकर भी
जो नंगा
और
पीठ से चिपकाये पेट को
मुस्कुराने पर
मजबूर है,
वही मजदूर है ।।

***

-- टी. श्रीनिवास राव
कार्यालय अधीक्षक
प्रमुख मुख्य इंजीनियर कार्यालय

रेत घरौंदे

वह सुनहरी सी थी
सुनहरी आज भी है
वह तपती थी
तपती आज भी है
समुंदर की इक प्यास लिए
भटकती थी
भटकती आज भी है
कभी नर्म हथेलियों से
चिपक जाती थी
कभी समय की तरह
फिसल जाती थी

फिसलती आज भी है .
आज उन फिसलते हुये लम्हों मे
तेरी याद बहुत सतायी
याद आई
रेत घरौंदों की
उन दरवाज़ों की
जो दायेरे की शक्ल लिए होते थे
उन दायरों की कोई दिशाएँ नहीं होती थीं ....
आज हर चेहरा अपनी
दिशाएँ लिए साथ चलता है
और दो अंजान मासूम हथेलियाँ
रेत घरौंदे से
हमें आवाज़ देती हैं .
जब जब दायरों को तोड़ोगे
नयी दिशाएँ तुम्हें आवाज़ देंगी
तब तुम मुझ से मिलने आ जाना
रेत घरौंदों मे
मासूम हथेलियाँ
इक प्यास लिए
तुम्हारे स्पर्श के इंतज़ार में हैं ।

-ख़ुर्शीद हयात
मुख्य नियंत्रक,परिचालन,मुख्यालय

अगले अंक में